224hi12

12

ह्रास

ह्रास

व्यवसाय की सम्पत्तियों पर व्यय जैसे फर्नीचर, फिक्सचर एवं दुकान की फिटिंग, मोटर कार, मशीन और औजार ये सभी वर्ष के न तो सामान हैं और न ही खर्चे। इस प्रकार के व्यय व्यवसाय को बहुत वर्षों तक सेवाएं प्रदान करते हैं और इसलिए ये स्थायी सम्पत्ति कहलाते हैं। यदि स्थायी सम्पत्तियों पर व्यय किसी भी एक साल के लाभ में से घटाया जाए, तो यह गलत हो जाएगा। जबकि उसका फायदा व्यवसाय में एक से अधिक वर्षों तक मिलता है। सही तो यह रहेगा कि उनकी लागत को व्यवसाय के लिए उनके उपयोगी वर्षों में बांट दिया जाए। स्थाई सम्पत्तियों की लागत के जिस भाग को प्रति वर्ष व्यय माना जाएगा वह ह्रास कहलाता है। इसे स्थायी सम्पत्ति पर ह्रास माना जाना चाहिए हानि नहीं। इस प्रकार ह्रास स्थायी सम्पत्ति के मूल्य में धीरे-धीरे होने वाली कमी है।

इस अध्याय में आप ह्रास को लगाने की विधि और उसके अर्थ के बारे में जानेंगे और ह्रास को खातों की किताबों में अभिलेखित करना सीखेंगे। स्थायी सम्पत्ति खाते को तैयार करना आदि को भी सीखेंगे।

उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात आप :

- ह्रास की अवधारणा और अर्थ को समझ सकेंगे;
- ह्रास के कारणों का वर्णन कर पाएंगे;
- ह्रास के उद्देश्यों का वर्णन कर सकेंगे;
- ह्रास को लगाने की विधियों को समझ सकेंगे एवं
- स्थायी सम्पत्ति खाता तैयार कर पाएंगे और प्रत्येक वर्ष के ह्रास की राशि को ज्ञात कर सकेंगे।

12.1 ह्रास का अर्थ

आप पहले से ही सम्पत्तियों और देनदारियों के अर्थ को जानते हो। सम्पत्तियों को मुख्यत: दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है। चालू सम्पत्तियाँ (नकद, देनदार या ग्राहकों का शेष, माल और सामग्री का स्टॉक) और स्थायी सम्पत्तियाँ (भवन, फर्नीचर एण्ड फिक्सचर्स, मशीन, प्लांट, मोटर कार)।

टिप्पणी

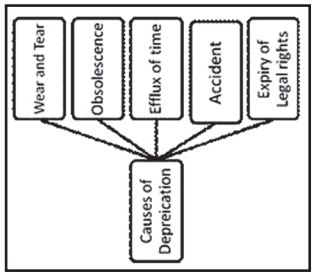

अवक्षयण के कारण

स्थायी सम्पत्तियाँ लम्बे समय तक की सम्पत्तियाँ कहलाती हैं, क्योंकि वे व्यवसाय को एक वर्ष से अधिक वर्षों तक फायदा पहुँचाती हैं। अधिकतर स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में उनके प्रयोग, समय व्यतीत होने के कारण कमी आती है तथा किसी नए अविष्कार के होने, बदलते फैशन आदि कारणों से भी कमी होती है। इसलिए उनके उपयोगी जीवन काल के समाप्त होने पर उनको बदलते रहना चाहिए। इसलिए स्थायी सम्पत्ति की कीमत उसके उपयोगी जीवन काल में बांट दी जाती है। प्रत्येक वर्ष के भाग को उस वर्ष का ह्रास माना जाता है।

उदाहरण के लिए एक कार्यालय के लिए कुर्सी ₹ 2,500 में खरीदी और यह अनुमान लगाया कि दस साल बाद यह बेकार हो जाएगी। कुर्सी के उपयोगी जीवन काल के दस वर्षों में उसकी लागत के ₹ 2,500 को बांट दिया जाएगा। प्रतिवर्ष के भाग की गणना निम्न प्रकार से की जाएगी।

$$\text{ह्रास} = \frac{\text{सम्पत्ति की लागत - अवशेष मूल्य (अगर है तो)}}{\text{सम्पत्ति का जीवन}}$$

$$\frac{₹\ 2,500}{10} = ₹\ 250$$

इसलिए ₹ 250 प्रत्येक वर्ष का ह्रास व्यय है।

इस प्रकार से ह्रास एक व्यय है, जो साल के दौरान स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में होने वाली कमी है। यह निम्न कारणों से होता है।

- इसके प्रयोग के कारण एवं समय व्यतीत होने के साथ-साथ सामान्य परिवर्तन के कारण।
- टैक्नोलॉजी के बदलने से, फैशन, घिसावट, रूचि और दूसरे बाजार की अप्रचलन।

12.2 ह्रास के कारण

निम्नलिखित कारणों से सम्पत्तियों में ह्रास हो जाती है :

i) सामान्य घिसावट एवं टूट-फूट के कारण

अ) इस्तेमाल करने के दौरान : प्रत्येक सम्पत्ति का जीवन होता है। जिसमें इसका प्रयोग होता है तथा यह उत्पादन या सेवा देती है। यदि किसी सम्पत्ति का इस्तेमाल लगातार होता रहता है तो उसके मूल्य में कमी आ जाती है। जैसे साईकिल उसके लगातार चलने और इस्तेमाल करने से उनके कार्य करने की क्षमता और कुशलता में कमी आ जाती है।

ब) समय व्यतीत होने के दौरान : जैसे समय व्यतीत होता है। प्राकृतिक तत्वों जैसे- हवा, पानी, बारिश इत्यादि वैज्ञानिक कारणों से भी सम्पत्तियों

टिप्पणी

की कीमत में कमी आती है। जैसे फर्नीचर को चाहे हमने उसे इस्तेमाल भी नहीं किया हो, समय व्यतीत होते-होते उसकी कीमत में कमी आ जाती है।

ii) **अप्रचलन**

अ) नए एवं श्रेष्ठ उपकरणों के विकास से पुरानी स्थाई सम्पत्तियों को उनके वास्तव में अनउपयोगी हो जाने से पहले ही, उपयोग में लाना बंद कर दिया जाता है। अच्छे औजारों और उन मशीनों का आना जो कम कीमत पर माल का उत्पादन करती हैं; इस तरह से पुराने औजारों को कीमत रहित कर देते हैं। क्योंकि वो ऊँची कीमत पर माल का उत्पादन करते हैं तथा इसे प्रतियोगी नहीं रहने देते। जैसे डीजल और इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव आने से भाप का इंजन बेकार हो गया।

ब) **फैशन, स्टाइल, रूचि अथवा बाजार की स्थिति के बदलने के कारण:** वस्तुओं और सेवाओं की मांग में कमी सम्पत्तियों को अप्रचलित कर देती है। फैशन, स्टाइल, रूचि या बाजार की स्थिति में परिवर्तन के कारण का भी यह परिणाम हो सकता है। सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी होने के कारण वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में लम्बे समय तक रूकावट आ जाती है। जैसे फैक्ट्रियां या मशीन का कार्य पुराने फैशन के हैट, जूते, फर्नीचर आदि बनाना।

स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में हुई हानि का कारण अप्रचलन कहलाता है और यह ह्रास के रूप में व्यय माना जाता है।

12.3 ह्रास के उद्देश्य

सम्पत्तियों पर ह्रास लगाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

i) **व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति दर्शाना :** स्थाई सम्पत्तियों का प्रभावपूर्ण उपयोगी जीवन होता है, जिसमें इसका मितव्ययी परिचालन किया जा सकता है। ह्रास स्थाई सम्पत्ति के मूल्य में कमी को कहते हैं। सम्पत्तियों के निरन्तर प्रयोग करने के कारण उनके मूल्य में कमी हो जाती है। यदि ह्रास की व्यवस्था नहीं की जाती है, तो लाभ हानि खाता किसी एक लेखा वर्ष में सही लाभ/हानि नहीं दर्शाएगा तथा स्थिति विवरण (Balance-Sheet) में सम्पत्तियाँ बढ़े हुए मूल्य पर लिखी जाएँगी। इस प्रकार स्थिति-विवरण से व्यापार की वित्तीय स्थिति का ठीक ज्ञान नहीं हो सकेगा। यदि वर्ष दर वर्ष ह्रास की अनदेखी की जाती है तो सम्पत्ति के पूर्ण रूप से क्षय हो जाने पर व्यवसायी व्यवसाय को सरलता से नहीं चला पाएगा।

ii) **सम्पत्ति का पुनर्स्थापन करने के लिए व्यापार में कोष स्थापित करना :** शुद्ध लाभ स्वामी द्वारा व्यवसाय में लगाई पूँजी का प्रतिफल होता है, जिसे वह नकद रूप में निकाल सकता है। यदि ह्रास लगाया जाएगा तो इससे शुद्ध लाभ कम हो जाएगा और प्रोपराइटर द्वारा निकाली गई राशि भी कम हो जाएगी और ह्रास के बराबर की

नकदी व्यवसाय में ही रह जाएगी और इस सम्पूर्ण राशि से प्रोपराइटर एक नई सम्पत्ति को स्थापित करने के योग्य हो जाएगा।

पाठगत प्रश्न 12.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. ह्रास स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में _____ वर्णित करती है।

ii. सम्पत्ति के अवशेष मूल्य का अभिप्राय वह _____ जिसपर स्थायी सम्पत्ति को _____ की सम्पत्ति पर बेचा जाता है।

iii. ह्रास को ज्ञात करने के लिए सम्पत्ति के लागत मूल्य में से अवशेष मूल्य को घटाकर _____ से भाग देते हैं।

iv. अप्रचलन स्थायी सम्पत्तियों की ऐसी स्थिति है, जो _____ फैशन, रूचि और अन्य बाजार की स्थिति के बदलने के कारण पैदा होती है।

12.4 ह्रास को प्रभावित करने वाले कारक

i) **सम्पत्ति का लागत मूल्य :** सम्पत्ति की लागत, सम्पत्ति की क्रय राशि होती है और उसमें वे समस्त व्यय जुड़े होते हैं, जो उस सम्पत्ति को इस्तेमाल करने से पहले होते हैं। उदाहरण के लिए माल को लदवाने व उतारने में हुए व्यय, गाड़ी भाड़ा, किराया, स्थापना व्यय इत्यादि।

ii) **सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल :** सम्पत्ति कितने वर्षों तक काम आती रहेगी यही उसका उपयोगी जीवन काल है।

iii) **अवशेष मूल्य :** सम्पत्ति जब कार्य के योग्य नहीं रहेगी तो जिस मूल्य पर वह बेची जाएगी, यह अवशिष्ट मूल्य ही कबाड़ का मूल्य है।

iv) **सम्पत्ति का ह्रासित मूल्य :** सम्पत्ति की लागत मूल्य में से सम्पत्ति के अवशिष्ट मूल्य को घटाकर सम्पत्ति का ह्रासित मूल्य ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण 1

एक जेनरेटर ₹ 5,00,000 का खरीदा था। ₹ 1,500 क्रेन ओपरेटर को ट्रक पर लदवाने के दिए, ₹ 7,000 जेनरेटर को फैक्ट्री तक पहुँचाने के लिए दिए। ₹ 2,000 फैक्ट्री साइट पहुँचाने पर उसको उतरवाने के लिए दिए। यह अनुमान लगाया कि जनरेटर 10 वर्षों तक चलेगा। उसके बाद यह ₹ 60,000 में बिक जाएगा। जेनरेटर के ह्रासित मूल्य की गणना कीजिए।

सम्पत्ति का लागत मूल्य :	क्रय मूल्य	₹ 5,00,000
	लदवाने का व्यय	₹ 1,500
	परिवहन	₹ 7,000
	उतरवाने का व्यय	₹ 2,000
	कुल	**₹ 5,10,500**

जेनरेटर का जीवन काल 10 साल

अवशेष मूल्य ₹ 60,000

जेनरेटर का ह्रासित मूल्य = ₹ 5,10,500 – ₹ 60,000

= ₹ 4,50,500

12.5 ह्रास को लगाने की सरल रेखा पद्धति

इस पद्धति के अनुसार ह्रास की राशि सालों-साल एक जैसी रहती है। माना, अगर एक सम्पत्ति का लागत मूल्य ₹ 1,00,000 रूपये है और उसपर स्थायी रूप से 10% की दर से ह्रास लगाना है। तब ₹ 10,000 रूपये प्रत्येक वर्ष ह्रास के अपलिखित होंगे। इसलिए इस विधि को ''स्थायी किश्त विधि'' या ''मूल लागत विधि'' कहते हैं। इस विधि के अनुसार, प्रत्येक वर्ष निम्न तरीके से राशि निकालकर अपलिखित कर देंगे :

$$\text{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{\text{सम्पत्ति का लागत मूल्य} - \text{अवशेष मूल्य}}{\text{अनुमानित जीवन अवधि}}$$

सम्पत्ति के लागत मूल्य में से उसके अवशेष मूल्य को घटाकर उसे अनुमानित जीवन अवधि से भाग कर दिया जाता है।

उदाहरण के लिए : एक मशीन ₹ 1,20,000 की खरीदी। उसका अनुमानित जीवन काल 10 साल है। उसका अवशेष मूल्य ₹ 20,000 है। एक साल के ह्रास की गणना नीचे की गई है :

$$\text{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{₹\ 1,20,000 - ₹\ 20,000}{10} = ₹\ 10,000$$

यदि उसका अवशेष बेचा नहीं जा सकता या उसके अवशेष से कोई पैसा वसूल नहीं किया जा सकता तो एक वर्ष का ह्रास होगा :

$$\text{प्रत्येक वर्ष का ह्रास} = \frac{₹\ 1,20,000}{10} = ₹\ 12,000$$

इस विधि के अनुसार ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष एक जैसी ही रहेगी। इसलिए यह विधि सरल रेखा पद्धति, स्थायी किश्त पद्धति या मूल लागत विधि कहलाती है।

उदाहरण 2

एक मशीन 1 जनवरी 2011, को ₹ 1,00,000 में खरीदी गई। उसका जीवनकाल 10 वर्ष है। अपने जीवन काल को पूरा करने के पश्चात मशीन के अवशेष से कुछ भी राशि प्राप्त नहीं होगी। यह निश्चय किया गया कि मशीन पर सरल रेखा पद्धति से 10% का ह्रास लगाया जाएगा।

मशीन के जीवन अवधि में प्रत्येक वर्ष के ह्रास की राशि की गणना कीजिए।

हल :

वर्ष	ह्रास की दर	ह्रास की राशि (₹)
2011	10%	10,000
2012	10%	10,000
2013	10%	10,000
2014	10%	10,000
2015	10%	10,000
2016	10%	10,000
2017	10%	10,000
2018	10%	10,000
2019	10%	10,000
2020	10%	10,000

ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष समान रहेगी। इसलिए यह विधि ''सरल रेखा पद्धति'' या ''स्थायी किश्त पद्धति'' या ''मूल लागत पद्धति'' कहलाती है।

12.6 सरल रेखा पद्धति के गुण

i) **सरलता :** ह्रास की गणना करने की यह पद्धति बहुत सरल है। इसलिए यह बहुत प्रसिद्ध है। इसमें ह्रास की राशि की गणना एक बार कर ली जाती है, तत्पश्चात प्रत्येक वर्ष में वही राशि अपलिखित करनी होती है। इसलिए यह विधि सरल और गणना करने में आसान होती है।

ii) **सम्पत्तियों का मूल्य शून्य होना :** ह्रास का आयोजन करते-करते अन्तिम वर्ष में सम्पत्ति का मूल्य स्वत: ही शून्य अथवा अवशेष के बराबर हो जाता है। दूसरे शब्दों में खाता पुस्तकों में किसी सम्पत्ति का मूल्य उसके जीवन काल की समाप्ति पर या तो शून्य हो जाता है या फिर अवशेष मूल्य के बराबर हो जाता है।

12.7 सरल रेखा पद्धति के दोष

i) **गणना करने में कठिनाई :** जब एक से अधिक मशीनें अपने अलग-अलग जीवन काल के साथ होती है, तो ह्रास की गणना करना बहुत मुश्किल हो जाता है, क्योंकि प्रत्येक मशीन पर अलग से ह्रास की गणना करनी पड़ेगी।

ii) **न्याय विरूद्ध/तर्कहीन :** यह हम भली भांति जानते हैं कि जैसे-जैसे सम्पत्ति पुरानी होती है, उसपर मरम्मत और रख-रखाव का व्यय बढ़ जाता है। इस प्रकार ह्रास+मरम्मत के रूप में लाभ-हानि खाते पर कुल भार पुराने वर्षों की अपेक्षा आने वाले वर्षों में अधिक होगा। यह तर्कहीन होगा क्योंकि सम्पत्ति की कुशलता और कार्य क्षमता पहले अधिक होती है और बाद के वर्षों में कम हो जाती है।

उदाहरण 3

X लिमिटेड ने 1 अप्रैल, 2011 को एक मशीन ₹ 1,00,000 कीमत वाली खरीदी। जिसका अनुमानित जीवन काल 10 वर्ष था। यह अनुमान लगाया जाता है कि 10 वर्षों के अंत में उसका अवशेष मूल्य ₹ 10,000 होगा। लाभ-हानि खाते में प्रतिवर्ष की ह्रास की राशि निकालिए। प्रत्येक वर्ष का ह्रास ज्ञात करने की दर भी निकालिए।

हल :

इस प्रश्न में दी गई सूचनाओं से ह्रास की राशि जिसे खाता में लिखना है, की गणना इस प्रकार से की जाएगी :

i. ह्रास की राशि की गणना

$$\text{वार्षिक ह्रास} = \frac{\text{मशीन की लागत - अनुमानित अवशेष मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का अनुमानित जीवन अवधि}}$$

$$\frac{₹\ 1,00,000 - ₹\ 10,000}{10} = ₹\ 9,000$$

ii. ह्रास की दर की गणना

$$\text{ह्रास की दर} = \frac{\text{वार्षिक ह्रास राशि X 100}}{\text{सम्पत्ति का लागत मूल्य}}$$

$$= \frac{9,000 \times 100}{1,00,000} = 9\%$$

उदाहरण 4

सलमान एण्ड उसमान ब्रदर्स ने 1 जुलाई, 2008 को एक मशीन ₹ 70,000 की खरीदी और ₹ 5000 उसकी स्थापना पर व्यय किए। फर्म ने 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति के अनुसार ह्रास को अपलिखित किया। प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को खाते बन्द कर दिए जाते हैं। मशीन और ह्रास खाते को तीन वर्षों तक दिखाना है।

हल :

मशीन की लागत = ₹ 70,000
स्थापना लागत = ₹ 5,000
कुल ₹ 75,000

ह्रास की दर = 10%

वार्षिक ह्रास होगा ₹ 75,000 X 10% = ₹ 7,500

मशीन खाता

नाम **जमा**

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2008				2008			
जुलाई 1	बैंक खाता		70,500	दिस. 31	ह्रास खाता $7000\times\frac{10}{100}\times\frac{6}{12}$		3,750
जुलाई 1	बैंक खाता		5,000	दिस. 31	शेष आ०ले०		71,250
			75,500				75,500
2009				2009			
जन. 1	शेष आ०ला०		71,250	दिस. 31	ह्रास खाता $75000\times\frac{10}{100}$		7,500
				दिस. 31	शेष आ०ले०		63,750
			71,250				71,250
2010				2010			
जन. 1	शेष आ०आ०		63,750	दिस. 31	ह्रास खाता $75000\times\frac{10}{100}$		7,500
				दिस. 31	शेष आ०ले०		56,250
			63,750				63,750

टिप्पणी

ह्रास खाता

नाम **जमा**

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2008				2008			
दिस. 31	मशीन खाता		3,750	दिस. 31	लाभ-हानि खाता		3,750
2009				2009			
दिस. 31	मशीन खाता		7,500	दिस. 31	लाभ-हानि खाता		7,500
2010				2010			
दिस.31	मशीन खाता		7,500	दिस. 31	लाभ-हानि खाता		7,500

उदाहरण 5

1 अप्रैल, 2006 को एक कम्पनी ने एक मशीन ₹ 1,00,000 में खरीदी। 1 अक्टूबर, 2008 को एक और मशीन, ₹ 20,000 में खरीदी और ₹ 2,000 उसकी स्थापना पर खर्च किए। प्रत्येक वर्ष 31 मार्च को खाते बंद किए जाते हैं। ह्रास की वार्षिक दर 10% है। सरल रेखा पद्धति से 5 वर्षों का मशीन खाता दर्शाइए।

हल

मशीन खाता

नाम **जमा**

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2006				2007			
अप्रैल 1	बैंक खाता		1,00,000	मार्च 31	ह्रास खाता		10,000
					$100000\times\frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ०ले०		90,000
			1,00,000				**1,00,000**
2007				2008			
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		90,000	मार्च 31	ह्रास खाता		10,000
					$100000\times\frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ०ले०		80,000
			90,000				**90,000**

2008				**2009**			
अप्रैल 1	शेष आ०ले०		80,000	मार्च 31	ह्रास खाता		11,100
अक्टू. 1	बैंक खाता		20,000		$100000\times\frac{10}{100}$		
					$22000\times\frac{10}{100}\times\frac{6}{12}$		
अक्टू. 1	बैंक खाता		2,000	मार्च 31	शेष आ०ले०		90,900
			1,02,000				1,02,000
2009				**2010**			
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		90,900	मार्च 31	ह्रास खाता		12,200
					$100000\times\frac{10}{100}$		
					$22000\times\frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ०ले०		78,700
			90,900				90,900
2010				**2011**			
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		78,700	मार्च 31	ह्रास खाता		12,200
					$100000\times\frac{10}{100}$		
					$22000\times\frac{10}{100}$		
				मार्च 31	शेष आ०ले०		66,500
			78,700				78,700
2011							
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		66,500				

उदाहरण 6

1 जनवरी 2003 को एक कम्पनी ने एक प्लांट ₹ 20,000 में खरीदा। उसी वर्ष 1 जुलाई में एक दूसरा प्लांट ₹ 8,000 में खरीदा और ₹ 2,000 उसको स्थापित करने में खर्च हुए। 1 जुलाई 2004 को प्लांट जो 1 जनवरी, 2003 में खरीदा था, बेकार हो गया, उसे ₹ 12,500 में बेच दिया। 1 अक्टूबर, 2005 को एक नया प्लांट ₹ 28,000 में खरीदा उसी तारीख में, जो प्लांट 1 जुलाई, 2003 को खरीदा था, ₹ 6,000 रूपये में बेच दिया।

प्रत्येक वर्ष उसकी मूल लागत पर 10% की दर से वार्षिक ह्रास ज्ञात कीजिए। प्लांट खाता 2003 से 2005 तक दिखाइए।

हल

प्लांट खाता

नाम जमा

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2003				2003			
जन. 1	नकद खाता		20,000	31 दिस.	ह्रास खाता		
जुलाई 1	नकद खाता		8,000		(i) वार्षिक 2,000		
	नकद खाता (व्यय)		2,000		(ii) अर्द्धवार्षिक 500		2,500
				31 दिस.	शेष आ०ले०		
					(i) 18,000		
					(ii) 9,500		27,500
			30,000				30,000
2004				2004			
जन. 1	शेष आ०ला०			जुलाई 1	नकद खाता (बेचा)		12,500
	(i) 18,000			दिस. 31	ह्रास खाता (i)		1,000[1]
	(ii) 9,500		27,500		लाभ-हानि खाता		4,500[1]
				जुलाई 1	ह्रास खाता (ii)		1,000
					(10,000 x 10/100 x 1)		
				दिस. 31	शेष आ०ले०		8,500
					(₹9,500 – ₹1,000)		
			27,500				27,500
2005				2005			
जन. 1	शेष आ०ला० (ii)		8,500	अक्ट. 1	नकद खाता (बेचा)		6,000
अक्ट. 1	नकद खाता (iii)		28,000	अक्ट. 1	ह्रास खाता (ii)		750[2]
				अक्ट. 1	लाभ-हानि खाता (हानि)		1,750
				दिस. 31	ह्रास खाता (iii)		700
					(28,000 x 10/100 x 3/12)		
				दिस. 31	शेष आ०ले०		27,300
			36,500				36,500

नोट : प्लांट के विक्रय पर हानि की गणना

(i)	1 जनवरी, 2004 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य [प्लांट (i)]	18,000
	घटाएं : छः महीने का ह्रास = $20,000 \times \frac{10}{100} \times \frac{6}{12}$	1,000
	1 जुलाई, 2004 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य	17,000
	घटाएं : प्लांट की बिक्री कीमत	12,500
	बिक्री पर हानि	4,500

(ii)	1 जनवरी, 2005 को बिके हुए प्लांट का लागत मूल्य [प्लांट (ii)]	8,500
	घटाएं : 9 महीने के ह्रास = $10,000 \times \frac{10}{100} \times \frac{9}{12}$	750
	1 अक्टूबर, 2005 को बिके प्लांट का लागत मूल्य	7,750
	घटाएं : बिक्री कीमत	6,000
	प्लांट की बिक्री पर हानि	1,750

पाठगत प्रश्न 12.2

रिक्त स्थान भरो :

i. ह्रास की स्थायी किस्त पद्धति की अवधारणा के अनुसार ह्रास की राशि, सम्पत्तियों पर विभिन्न वर्षों के अन्तर्गत _____ रहता है।

ii. ह्रास लगाने की सरल रेखा पद्धति _____ के नाम से भी जानी जाती है।

iii. सम्पत्तियों की कीमत, सरल रेखा पद्धति से उसकी जीवन अवधि के अन्त में _____ या उसके _____ के बराबर हो जाती है।

iv. सरल रेखा पद्धति के अन्तर्गत लाभ-हानि खाते का सम्पूर्ण भार पुराने वर्षों की अपेक्षा ह्रास + मरम्मत व्यय के वर्षों में _____ हो जाता है।

12.8 ह्रासित शेष पद्धति

इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति की कीमत प्रतिवर्ष घटती रहती है। ह्रास लगाने की राशि भी प्रतिवर्ष कम होती रहती है। इसमें एक निश्चित प्रतिशत दर से सम्पत्ति पर ह्रास लगाया जाता है। जो किताबों में प्रत्येक वर्ष दिखाया जाता है। इस पद्धति के अनुसार सम्पत्ति खाता कभी भी शून्य नहीं किया जा सकता।

माना, सम्पत्ति की कीमत ₹ 40,000 है और प्रत्येक वर्ष 10% वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित किया जाता है। पहले वर्ष में ह्रास की राशि ₹ 4,000 होगी अर्थात् ₹ 40,000 का 10%। उसका लागत मूल्य घटकर ₹ 36,000 हो जाएगा (₹ 40,000 – ₹ 4,000)। अब अगले वर्ष ह्रास की राशि ₹ 3,600 होगी (₹ 36,000 का 10%)। इसलिए प्रत्येक वर्ष ह्रास की राशि कम हो जाएगी। ह्रास लगाने की इस पद्धति को घटते हुए शेष या ह्रासित शेष पद्धति कहते हैं।

उदाहरण 7

एक मशीन 1 जनवरी, 2011 को ₹ 1,00,000 में खरीदी और उसका जीवन काल 10 वर्ष है। अपना जीवन काल खत्म करने पर इसको कबाड़ मान लिया जाएगा तथा इससे ₹ 4000 वसूल कर लिया जाएगा और यह निश्चय किया गया कि मशीन पर 10% वार्षिक दर से क्रमागत शेष पद्धति द्वारा ह्रास की गणना की जाएगी।

इस मशीन के जीवनकाल के प्रत्येक वर्ष के ह्रास की गणना कीजिए।

हल

वर्ष	ह्रास की दर	ह्रास की राशि ₹
2011	10%	10,000
2012	10%	9,000
2013	10%	8,100
2014	10%	7,290
2015	10%	6,561
2016	10%	5,905
2017	10%	5,314
2018	10%	4,783
2019	10%	4,305
2020	10%	3,874

इस विधि द्वारा ह्रास की राशि प्रतिवर्ष घटती जाती है। इसलिए इस विधि को क्रमागत ह्रास पद्धति या 'घटते हुए शेष पद्धति' या 'ह्रासित शेष पद्धति' कहते हैं।

12.9 ह्रासित शेष पद्धति के गुण

i) लाभ-हानि खाते पर समान भार

प्रारम्भ में सम्पत्ति की उत्पादकता अधिक होती हैं, इसलिए लाभ में इसका योगदान अधिक होता है इसलिए ह्रास के रूप में व्यय भी अधिक लगाया जाना चाहिए।

प्रारम्भ के वर्षों में सम्पत्ति के निरन्तर प्रयोग में आने के कारण मरम्मत व्यय प्रतिवर्ष बढ़ता है तथा इस पद्धति के अन्तर्गत ह्रास राशि निरन्तर घटती रहती है। इन दोनों बातों का सामूहिक प्रभाव यह होता है कि इस विधि के अन्तर्गत ह्रास + मरम्मत के रूप में सम्पत्ति के जीवन काल में प्रत्येक वर्ष लाभ-हानि खाते पर लगभग समान भार पड़ता है।

12.10 ह्रासित शेष पद्धति के दोष

i) **सम्पत्ति का मूल्य शून्य न होना :** इस पद्धति के अन्तर्गत, सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक कम नही हो सकता, चाहे उसका कोई अवशेष मूल्य न हो।

ii) **जटिलता :** इस पद्धति से, ह्रास की दर को आसानी से निर्धारित नहीं किया जा सकता।

पाठगत प्रश्न 12.3

उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

i. ह्रास, स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में _____ दर्शाता है।

ii. मशीन पर ह्रास की राशि को __________ खाते में जमा किया जाता है।
iii. ह्रास की सरल रेखा पद्धति में __________ ह्रास की गणना होती है।
iv. ह्रास की क्रमागत ह्रास पद्धति में __________ ह्रास की गणना होती है।
v. सम्पत्तियों के मूल्य को, चाहे उसका कोई अवशेष मूल्य न हो, ह्रास की क्रमागत ह्रास पद्धति में __________ नहीं किया जा सकता।

उदाहरण 8

विडसन इंटरप्राइजेज ने 1 अक्टूबर, 2012 को एक मशीन ₹ 1,00,000 में खरीदी। यह निश्चय किया गया कि क्रमागत ह्रास विधि से 20% वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित किया जाएगा। 1 जनवरी, 2015 को एक और मशीन ₹ 40,000 में खरीदी।

30 मार्च 2016 तक का प्लांट एण्ड मशीन खाता तैयार कीजिए। लेखांकन वर्ष 31 मार्च को बंद होता है।

हल :

संयंत्र (प्लांट) और मशीन खाता

नाम **जमा**

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2012				2013			
अक्ट. 1	बैंक खाता		1,00,000	मार्च 31	ह्रास खाता (6 महीने का)		10,000
				मार्च 31	शेष आ०ले०		90,000
			1,00,000				1,00,000
2013				2014			
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		90,000	मार्च 31	ह्रास खाते से (90,000 पर)		18,000
				मार्च 31	शेष आ०ले०		72,000
			90,000				90,000
2014				2015			
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		72,000	मार्च 31	ह्रास खाता (40,000 पर 3 माह का)		16,400
2015							
जन. 1	बैंक खाता		40,000	मार्च 31	शेष आ०ले०		95,600
			1,12,000				1,12,000

2015				2016			
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		95,600	मार्च 31	ह्रास खाता (95,600 पर 1 वर्ष का)		19,120
				मार्च 31	शेष आ०ले०		76,480
			95,600				95,600
2016							
1 अप्रैल	शेष आ०ला०		76,480				

उदाहरण 9

1 अप्रैल, 2009 को गंगा ब्रदर्स ने दो मशीनें, प्रत्येक की कीमत ₹ 75,000 है, खरीदीं। 10% की दर से घटते हुए शेष पद्धति से ह्रास लगाया जाएगा। 31 मार्च, 2011 को एक मशीन ₹ 55,000 में बेच दी। एक नया मॉडल ₹ 80,000 की लागत का उसी दिन खरीदा गया। कम्पनी की पुस्तकों में 2009-10 से 2010-11 का मशीन खाता बनाइए।

हल

मशीन खाता

नाम **जमा**

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2009				2010			
अप्रैल 1	बैंक खाता		1,50,000	मार्च 31	ह्रास खाता		15,000
				मार्च 31	शेष आ०ले०		1,35,000
			1,50,000				1,50,000
2010				2011			
अप्रैल 1	शेष आ०ला०		1,35,000	मार्च 31	ह्रास खाता		13,500
				मार्च 31	बैंक खाता		55,000
2011							
मार्च 31	बैंक खाता		80,000	मार्च 31	लाभ-हानि खाता		5,750
				मार्च 31	शेष आ०ले०		1,40,750
			2,15,000				2,15,000

नोट : मशीन के विक्रय पर हानि की गणना :

	₹
आरम्भिक लागत	75,000
2010 का ह्रास	-7,500
	67,500
2011 का ह्रास	-6,750
(घटते हुए शेष पद्धति)	60,750
बिक्री लागत	-55,000
बिक्री पर हानि	5,750

उदाहरण 10

1 अक्टूबर, 2008 को आकाश ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने एक ट्रक ₹ 8,00,000 की कीमत का खरीदा। 1 अप्रैल, 2010 को ट्रक की दुर्घटना हो गई और वह पूरी तरह टूट गया और बीमा कम्पनी से कुल ₹ 6,00,000 प्राप्त हुए। उसी तारीख को कम्पनी ने ₹ 10,00,000 का एक और ट्रक खरीदा। कम्पनी को 20% की वार्षिक दर से घटते हुए शेष विधि से ह्रास लगाना है। वर्ष 2008 से 2010 तक ट्रक खाता बनाइए।

ट्रक खाता

नाम **जमा**

दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹	दिनांक	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि ₹
2008				2008			
अक्ट. 1	बैंक खाता		8,00,000	दिस. 31	ह्रास खाता		40,000
				दिस. 31	शेष आ०ले०		7,60,000
			8,00,000				8,00,000
2009				2009			
जन. 1	शेष आ०ला०		7,60,000	दिस. 31	ह्रास खाता		1,52,000
					$7,60,000 \times \frac{20}{100}$		
				दिस. 31	शेष आ०ले०		6,08,000
			7,60,000				7,60,000
2010				2010			
जन. 1	शेष		6,08,000	अप्रैल 1	बैंक खाता		6,00,000
अप्रैल 1	लाभ-हानि खाता		22,400	अप्रैल 1	ह्रास खाता		30,400
					$6,08,000 \times \frac{20}{100} \times \frac{3}{12}$		
अप्रैल 1	बैंक खाता		10,00,000	दिस. 31	ह्रास खाता		1,50,000
					$1,00,000 \times \frac{20}{100} \times \frac{9}{12}$		
				दिस. 31	शेष आ०ले०		8,50,000
			16,30,400				16,30,400

स्थायी किस्त पद्धति तथा ह्रासित शेष पद्धति में अंतर

क्र.स.	अंतर का आधार	स्थायी किस्त पद्धति	ह्रासित शेष पद्धति
1.	गणना का आधार	इसमें सम्पत्ति की मूल लागत पर ह्रास की गणना की जाती है।	इसमें प्रथम वर्ष में सम्पत्ति की मूल लागत पर तथा बाद में वर्षों के घटते शेष पर ह्रास की गणना की जाती है।

2.	ह्रास की राशि	इसमें ह्रास की राशि प्रतिवर्ष समान रहती है।	इसमें ह्रास की राशि प्रतिवर्ष घटती है।
3.	सम्पत्ति का मूल्य	सम्पत्ति का जीवनकाल समाप्त होने पर सम्पत्ति का मूल्य शून्य हो जाता है।	सम्पत्ति का जीवन काल समाप्त होने पर सम्पत्ति का मूल्य शून्य नहीं हो सकता।
4.	ह्रास और मरम्मत	ह्रास और मरम्मत दोनों की राशि शुरू के वर्षों में कम और बाद के वर्षों में अधिक होती है।	ह्रास और मरम्मत दोनों की राशि प्रतिवर्ष लगभग एकसमान रहती है।

पाठगत प्रश्न 12.4

I. निम्न में से कौन से विवरण सही है और कौन से गलत :

i. ह्रास की राशि प्रतिवर्ष सरल रेखा पद्धति में कम होती रहती है।

ii. ह्रास की राशि क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार समस्त वर्षों में एक समान रहती है।

iii. सरल रेखा पद्धति में सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक कम हो जाता है।

iv. क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक नहीं घट सकता।

II. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. जिस पर ह्रास लगाया जाता है वह है :

क) माल का स्टॉक ख) चालू सम्पत्ति

ग) स्थायी सम्पत्ति ग) तरल सम्पत्ति

ii. ह्रास शब्द का इस्तेमाल जिनके लिए होता है वह है :

क) सम्पत्तियों की घिसावट

ख) सम्पत्तियों के मूल्य में कमी का होना

ग) औजारों के उत्तम गुण या विकास में सुधार

घ) सम्पत्तियों का जीवन काल और इस्तेमाल के कारण

iii. सरल रेखा पद्धति द्वारा स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास लगाने के लिए सम्पत्ति के मूल्य को लिया जाता है।

क) लागत मूल्य ख) घटता हुआ मूल्य

ग) अवशेष मूल्य घ) पुस्तकीय मूल्य

iv. स्थायी सम्पत्तियों पर क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा ह्रास लगाने पर, सम्पत्ति का मूल्य लिया जाएगा।
क) प्रारम्भिक लागत मूल्य ख) घटता हुआ मूल्य
ग) अवशेष मूल्य घ) पुस्तकीय मूल्य

v. ह्रास के लिए राशि की गणना की जाती है :
क) सम्पत्ति की अवशेष मूल्य के राशि को जोड़कर
ख) सम्पत्ति में अवशेष मूल्य की राशि को न जोड़कर
ग) अवशेष मूल्य को सम्पत्ति के मूल्य से कम करके
घ) इनमें से कोई नहीं।

vi. इनमें से कौन सा ह्रास का करण नहीं है
क) सामान्य घिसावट ख) अप्रचलन में होना
ग) सम्पत्ति की कीमत घ) बाजार मूल्य में कमी या बढ़ोत्तरी

vii. इनमें से कौन सा वार्षिक ह्रास होगा।
क) कुल लागत + स्थापना व्यय
ख) (कुल लागत – अवशेष मूल्य) ÷ जीवनकाल
ग) (कुल लागत + अवशेष मूल्य) ÷ जीवनकाल
घ) इनमें से कोई नहीं

viii. इनमें से कौन सा तत्व सम्पत्ति के वार्षिक ह्रास को प्रभावित नहीं करता:
क) सम्पत्ति की लागत ख) सम्पत्ति का अवशेष मूल्य
ग) सम्पत्ति का जीवन काल घ) सम्पत्ति का वार्षिक रख-रखाव

ix. निम्न में से कौन सी सम्पत्ति पर ह्रास लगाया जाता है :
क) स्टॉक ख) देनदार ग) मशीन घ) भूमि

x. निम्न से कौन सी सम्पत्ति पर ह्रास नहीं लगाया गया :
क) मशीन ख) संयंत्र ग) फोटो कॉपीअर घ) स्टॉक

आपने क्या सीखा

- टूट-फूट, काल समाप्ति, अप्रचलन तथा अन्य कारणों से किसी सम्पत्ति के मूल्य में जो कमी होती है, उसे ह्रास कहते हैं।

- **ह्रास के कारण**
  - → इस्तेमाल के दौरान टूट-फूट होना (काम करने से घिस जाना)।
  - → समय व्यतीत होने के कारण मूल्य में कमी
  - → उन्नत तकनीक के कारण अप्रचलन।

- **ह्रास के उद्देश्य**
  - → व्यवसाय की सही वित्तीय स्थिति को दर्शाना।
  - → व्यवसाय में नई सम्पत्ति का पुनर्स्थापन करने के लिए फण्ड बनाना।

- **ह्रास लगाने की पद्धतियां**
  - → सरल रेखा पद्धति
  - → क्रमागत ह्रास पद्धति
- **सरल रेखा पद्धति के गुण**
  - → सरलता
  - → सम्पत्तियों का पूर्णरूप से अपलिखित करना
- **सरल रेखा पद्धति के दोष**
  - → गणना करने में कठिनाई
  - → तर्कहीनता
- **क्रमागत ह्रास पद्धति के गुण**
  - → लाभ-हानि खाते पर एक समान भार
  - → सम्पत्तियों का मूल्य कभी भी शून्य नहीं लिखा जाता।
- **क्रमागत ह्रास पद्धति के दोष**
  - → सम्पत्तियों को पूर्णरूप से अपलिखित नहीं किया जाता
  - → जटिलता

पाठांत प्रश्न

1. ह्रास क्या है? ह्रास के विभिन्न उद्देश्य लिखो।
2. ह्रास को लगाने के कारण क्या हैं?
3. ह्रास को लगाने की दो पद्धतियाँ क्या है? उनके गुण-दोषों का वर्णन कीजिए।
4. ह्रास लगाने के प्रमुख उद्देश्य क्या है?
5. ह्रास की सरल रेखा पद्धति तथा क्रमागत ह्रास पद्धति में अन्तर बताइए।
6. कृष्णमोहन लिमिटेड ने 1 अक्टूबर, 2008 को एक मशीन ₹ 90,000 की खरीदी और उसकी स्थापना करने में ₹ 10,000 रूपये और खर्च किए। ह्रास उसके लागत मूल्य पर 10% की दर से लगाया जाता है। कम्पनी की पुस्तकों में तीन वर्षों का मशीन खाता बनाइए। यदि खाते 31 मार्च को बन्द होते हैं।
7. 1 अप्रैल, 2008 को आसाही लिमिटेड ने ₹ 80,000 में एक मशीन खरीदी और ₹ 20,000 उसकी स्थापना करने व मरम्मत करने में खर्च किए। 30 सितम्बर, 2011 को वह मशीन ₹ 60,000 में बेच दी। वर्ष 2008 से 2011 तक का मशीन खाता तैयार कीजिए, यदि ह्रास 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति द्वारा लगाया जाता है।

8. अजय कुमार एण्ड कम्पनी ने 1 अप्रैल, 2007 को ₹ 20,000 में एक मशीन खरीदी। मशीन पर 10% वार्षिक दर से सरल रेखा पद्धति द्वारा ह्रास लगाया जाता है। 1 अक्टूबर 2010 को मशीन को ₹ 8,000 में बेच दिया। मशीन खाता बनाइए यदि खाते 31 मार्च को बंद होते हैं।

9. 1 जनवरी, 2008 को एक संयंत्र ₹ 80,000 में खरीदा। यह अनुमान लगाया जाता है कि उसका अवशेष मूल्य उसके जीवन काल के 10 वर्षों के अंत में ₹ 27,894 होगा। ह्रास 10% वार्षिक की दर से क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा ज्ञात करना है। कम्पनी के खातों में 4 वर्षों का संयंत्र खाता बनाइए जबकि खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बंद होते हैं।

10. 1 जनवरी, 1987 को ₹ 10,000 की मशीन क्रय की। 1जुलाई, 1988 को ₹ 6,000 कीमत वाली एक नई मशीन खरीदी। 30 जून 1990 को 1 जुलाई, 1988 को खरीदी गई मशीन, ₹ 6000 में बेच दी। 4 वर्षों का मशीन खाता तैयार कीजिए। यदि लेखांकन अवधि 31 दिसम्बर को समाप्त होती हो। ह्रास 10% वार्षिक दर से क्रमागत ह्रास पद्धति द्वारा लगाया जाएगा।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 (i) कमी (ii) राशि, जीवनकाल (iii) सम्पत्तियों की जीवन अवधि (iv) टैक्नोलॉजी

12.2 (i) समान (ii) स्थायी किस्त पद्धति अथवा मूल लागत विधि (iii) शून्य, शुद्ध अवशेष मूल्य (iv) बाद, अधिक

12.3 (i) कमी (ii) मशीन (iii) मूल लागत पर (iv) प्रतिवर्ष आरम्भिक शेष पर (v) शून्य

12.4 **I.** (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

II. (i) ग (ii) ख (iii) क (iv) ख (v) ग
(vi) घ (vii) ख (viii) घ (ix) ग (x) घ

आपके लिए क्रियाकलाप

- अपने माता-पिता से विभिन्न स्थायी सम्पत्तियों जैसे टी.वी., फ्रिज, मोटरसाईकिल, कार इत्यादि की खरीदने की तारीख पूछो। उनकी जीवन अवधि के साथ प्रत्येक सम्पत्ति पर प्रत्येक वर्ष की ह्रास की राशि ज्ञात करो।